वीनस के ब्योपारी का वृत्तान्त

जिसको काशीनाथ खत्री आगरा निवासी ने
अंग्रेजी से अनुवाद किया
और
श्रीपण्डित गोपीनाथ ने संशोधन कर के-
"भारत दीपिका" द्वारा
प्रकाशित किया

"मित्रविलास" यन्त्र लाहौर में श्रीपण्डित-
मुकुन्दराम यन्त्राध्यक्ष की आज्ञानुसार
मुद्रित हुआ
संवत् १९३८

मूल्य ।=)

भूमिका

कवि शिरोमणि शेकस्पियर, SHAKESPERE केवल अपने ग्रेट बृटन देशमें ही नहीं, वरन योरपके सब प्रदेशोमें अपनी कविता और नाट्य रचना के कारण प्रसिद्ध है। इसकी कविता अत्यंत गूढ़ मधुर और ललितहै। इसके नाटक ऐसी सुंदर अपूर्व्व रीतिसे लिखेहुए हैं कि उनमें मानों कविने मनुष्यके हृदयके भाव संकल्प, विकल्प, प्रीति भय, त्रास, चिंता आदि का साक्षात् चित्रही, चित्रितकरदियाहै। इसके नामकी उन प्रदेशों में बड़ी प्रतिष्ठा और मानता है। उसके नाटकों के तमाशे नित्य प्रति उनदेशों के नाट्य भवनों में हुआ करते हैं। इस कविके सब नाटकोंको, जो २० हैं, साधारण पाठकों के चित्त विनोदार्थ चार्लस लैंब CHARLES LAMB साहबने वर्त्तमान कालकी सुंदर अंग्रेजी भाषामें इतिहास, और कहानियों की रीतिपर लिखाहै यह बड़े मनोहर और ललितहैं। इसकारण हमारा विचारहै कि इनको सरलहिन्दी भाषामें अनुवादकरालें। उनमें से पहले नाटक का अनुवाद पाठकगण की भेट करते हैं आशाहै कि इन के

पाठ से उनका चित्त प्रसन्न हो।

अन्त को मैं अपने परम स्नेही और परम विद्वान् मित्र श्रीयुत पंडित मुकन्दराम जी, "मित्रविलास" प्रेस लाहौर के अध्यक्ष का धन्यवाद करता हूं कि, जिनकी कृपा से यह ग्रंथ ऐसा सुंदर और शुद्ध रीति से पुस्तकाकार छपना आरम्भ हुआ है।

८म वैशाख संवत् १९३८	}	काशीनाथ खत्तरी आगरा निवासी,

वीनस के व्योपारी का वृत्तान्त

वीनस नगर में शैलाक नामक एक यहूदी रहता था। ईसाई व्योपारियों को आवश्यकता के समय बहुत ही अधिक व्याज पर रुपैया देताथा और इसी कारण बड़ा धनवान् बन गयाथा। निर्दय ऐसाथा कि अपने ऋणियों को महा दुःख दे २ कर रुपैया वसूल करता और उनको ऐसा पिटा ता कि बहुधा सज्जन लोग उसका यह व्यापार देख बहुत ही अप्रसन्न होते। उसी नगर में ऐण्टोनियो नामी एक और व्या पारी भी रहता था जो दया की खान था और दीन दुःखियों को दुःख निवृत्ति के अर्थ उन्हें झट रुपैया दे देता और व्याज उनसे कुछ न लेता। शैलाक इस दयावान् व्यक्ति को देख नित्य जला करता और ऐण्टोनियो भी इस परम लोभी से बड़ी ग्लानि रखताथा। जब कभी बाजारमें इन दोनों की भेंट होजाती तो ऐण्टोनियो नित्य शैलाक को धिक्कारता और उसके निर्दयी पने पर उसको बिन चूके फिटकारता। शैलाक बिना उत्तर दिये सब सह लेता और मनमें यही सोचता कि कोई अवसर मिले तो इसे फंसाऊं और सारा बदला निकालूं। ऐण्टोनियो

अत्यन्त सरलचित और साथही धन धान्यसे भी पूरित था। सबका प्रीति सहित आदर करता और मीठे वचनोंसे सत्कार देता। जिन २ गुणों के अर्थ प्राचीन रूमी बड़े प्रतिष्ठा और शोभा युक्त समझे जातेथे वह सब गुण ऐण्टोनियों में समवेत थे। इटली के सारे देशमें उससे अधिक सुशील और धार्म्मिक कोई आज तक नहीं हुआ। सब नगर निवासी इस सज्जन से अत्यंत प्रीति रखते थे। और मित्रों में इसका एक परम प्रिय मित्र वैसेनियो नामक रईस था। इस मनुष्यके पास कुछ बहुत धन नहीं था और जो कुछ थोड़ा बहुत था भी वह भी इसने बहुव्यय द्वारा लुटादियाथा। जब कभी इसे कुछ रुपैये पैसे की आवश्यकता होती तो ऐण्टोनियो के पास चला आता, जो निष्कपट हृदय से उसकी सहायता करता और अपना धन इस रीति से उसको दे देता कि किसीको इन दोनों के धन में कुछ भेद जान न पड़ता था।

एक दिन यही वैसेनियो अपने मित्र ऐण्टोनियो के पास आया और कहने लगा कि "हे प्रिय! इसी नगर में एक परम धनवती कन्याहै उसका पिता अभी बहुत सा धन और भूमि छोड़ कर मर गया है। मेरा विचार है कि इससे अपना विवाह करके फिर पहले की न्याई धन और सम्पत्ति युक्त होजाऊं। इसके पिताके जीवित रहने पर मैं उसके घर पर आया जाया करताथा और वह ऐसे कटाक्ष भरे नेत्रोंसे मेरी ओर देखा करतीथी

कि जिससे साफ़२ प्रकट होताथा कि उसकी कामना मुझे अपना पति बनाने कीहै। परंतु हे मित्र! मेरे पास अब इतना धन नहीं है कि ऐसी लक्ष्मी स्वरूपास्त्रीके पति होने के योग्य अपनी सब सूरत और भड़क बना सकूं। इसकारण से सविनय निवेदन करता हूं कि तीन हज़ार डुकेट मुद्रा(१) मुझे उधार दीजे कि आपकी कृपासे इस धनवती कन्या का स्वामी होजाऊं।" ऐएटोनियो ने उत्तर दिया कि "मित्र! इस समय मेरे पास इतना द्रव्य नहीं है परंतु थोड़े ही दिनों में मेरे मालके जहाज़ आजाने वालेहैं उतने दिन तक के लिये यदि और स्थान से रुपैया हाथ आजाय तो अच्छी बात हो। चलो, शैलाक के पास चलें यदि वह जब तक के लिये मुझे ऋण दे दे तो तुमारा मनोरथ सिद्ध होजाय।"

दोनों मित्र यह सोच विचार कर शैलाक के पास गये और ऐएटोनियो से अपने आने का प्रयोजन कहा। यहूदी उसकी बात सुनते ही मनमें सोचने लगा कि "यदि यह मेरे दांव पर चढ़जाय तो मैं इससे अपना पुराना बदला भली भान्ति चुकालूं। यह ईसाई हमारी जाति से घृणा करते हैं, बिना ब्याज लोगों को रुपैयादेते हैं, सब व्योपारियों के बीच मुझे सदा भला बुरा कहते हैं; अब ऐसे समय पर भी बदला न लिया तो धिक है मुझपर! अब देखिये क्योंकर फंसाताहूं।" ऐएटोनियो, यह देख कर कि, शैलाक बहुत देर से कुछ सोच रहाहै, उत्तर नहीं देता, अधीर हो कर बोला कि "क्यों भाई! क्या कहते हो? ऋण दोगे वा नहीं?"

यहूदी ने उत्तर दिया कि "सुनो साहिब! आपने वीसीयों वेर मुझे बाजार में भला बुरा कहा, मेरे ब्याज खाने पर धिक्कार दी, परंतु मैं ने आपके सब कथन को धैर्य के साथ सहन कर लिया, जैसी कि हमारी जात वालों की रीत है। कितनी वेर आप ने मुझे "नास्तिक" और "कटखना कुत्ता" कहा, और कुत्ते के समान मुझे दुरदुराया और अब आप मेरी सहायता चाहते हैं? कहीं कुत्ते के पास भी धन होता है कि वह आपको तीन हजार मुद्रा उधार दे सके? आप के मेरा इस भान्ति सत्कार करने पर क्या अब मुझे योग्य है कि मैं परम दीन हो कर आपसे कहूं कि "श्रीयुत महाराज! बुध के दिन आपने मुझे कुत्ता कह कर पुकारा और मेरे वस्त्रों पर थूक दिया था इस कृपा के बदले मुझसे यह सहायता हो सकती है?" पेराटोनियो ने यह वाक्य सुन कर कहा कि "तुमारे दुष्ट चलन को मैं अब भी हज़ार वार बुरा कहूंगा और तुमैं धिक्कारूंगा। तुमारे दुष्ट व्यवहार को मैं कभी अच्छा नहीं कह सकता; यदि तुमें ऋण देना स्वीकार है तो मुझे मित्र समझ के मत दो, जिस प्रकार वैरियों को दिया करते हैं उस भांति दो। यदि नियत मिति पर तुमारा रुपैया न देऊं तो जो दंड कहो अपने सिर पर ले लूं।"

शैलाक, इस वाक्य से लज्जित होकर, कहने लगा कि "आप अप्रसन्न नहों; मैं मित्रभाव से ही रुपैया आपको दूंगा और ब्याज भी आपसे कुछ न लूंगा। जो कुछ अपमान और तिरस्कार

आपने मेरा कियाहै उन सब को क्षमा करता हूं।" येन्टोनियो, यहूदी का यह कथन सुन बड़ा आश्चर्य में हुआ कि क्यों कर इसका स्वभाव एक संग ऐसा बदलगया। शैलाक दिखाने के लिये बराबर कहता रहा कि "मैं तीन सहस्र डुकेट आपको दूंगा और ब्याज छोड़ दूंगा, कि जिससे आपकी कृपा सदैव मेरे ऊपर बनी रहे; परंतु कृपा पूर्वक इतना कीजियेगा कि एक न्यायाधीश के सामने चल कर, प्रसन्न चित्त हो, कौतुक के हेतु उस पत्रपर अपना हस्ताक्षर करदो जिसपर लिखा रहता है कि यदि अमुक मिति पर रुपैया न पहुंचे तो मेरे शरीर में से जहां से चाहे आप सेर मांस ऋण दाता काट ले।"

येन्टोनियो ने कहा "बहुत अच्छा, मैं प्रसन्नता पूर्वक उस पत्र पर हस्ताक्षर कर दूंगा। तुम निस्सन्देह मुझ पर बहुत अनुग्रह करते हो।" वैसेनियो ने इस समय पर अपने मित्र से कहा कि "येन्टोनियो! ऐसा पत्र लिख देना योग्य नहीं है।" येन्टोनियो ने हठ करके उत्तर दिया कि "मित्र! इससे मुझे कुछ भय नहीं, मिति पूरी होने के पहले ही मेरा माल पहुंच जायगा कि जिससे मैं इसका सब ऋण चुका दूंगा।"

शैलाक इन दोनों का वादानुवाद देख कपट पूर्वक उच्च स्वर से कहने लगा कि "ओः बाबा इब्राहीम! (१) यह ईसाई लोग कैसे अविश्वासी हैं! वह अपने समानही सब का मन जानते हैं। (वैसेनियो की ओर झुक कर) भला वैसेनियो! यदि समय

ऐसे मधुर और नम्र वचन कह कर उस कुलांगना ने अपने कोमल हस्त कमल से यह अंगूठी अपने प्रियतम की अंगुली में पहरा दी। जब इस प्रकार वैसेनियो (निर्धन पुरुष) को उस श्रीमती कुलवती युवती ने अपना पति बना लिया, तब वह अत्यंत हर्ष और विस्मय से परिपूर्ण हो उठा, तथा गद्गद वाणीसे स्नेह और कृतज्ञता के वचन कहने लगा और उसकी अंगूठी पहन कर प्रतिज्ञा की कि यावत् जीवन इसे अपने से पृथक् न करूंगा।

जब इन दोनोंमें इस प्रकार स्नेह और प्रीति का संचार होरहा था और प्रेमयुक्त वार्त्तालाप का प्रवाह जारी था कि, ग्रेशियो ने (जो वैसेनियोके साथ आयाथा) अपने मित्र वैसेनियो से कहा कि "अब तुमारा तो विवाह होगया, यदि मुझे भी अनुमति और आज्ञा दो तो मैं भी इसी समय विवाह कर लूं।" वैसेनियोने परम प्रसन्न होकर कहा कि "यदि तुमें कोई योग्य स्त्री मिले तो निस्सन्देह करलो।" ग्रेशियोने सविनय निवेदन किया कि "मेरा प्रेम आपकी स्वामिनी (पोरशिया) की अनुचरी नेरिसा के साथ है और उसने मेरे साथ प्रतिज्ञा की हुई है कि जब तुमारे स्वामी के साथ मेरी मालिकन विवाह करना स्वीकार करलेगी, तब मैं भी तुमारे साथ विवाह कर लूंगी।" पोरशियाने अपनी सहचारिणी नेरिसाको बुलाकर पूछा कि "हे सखि! यह बात सच है?" नेरिसा ने लज्जा सहित आंखे नीची करके कहा कि "हां स्वामिनि! सच है, यदि आपकी आज्ञा हो।" दोनो ने इस संयोग पर अपनी २ पूर्ण

प्रसन्नता प्रकट की और कहा कि इन दोनों के विवाह से हमारा सम्बन्ध और भी दृढ़ रहेगा और यह विवाह हमारे विवाह का एक दृढ़ स्मारक चिन्ह होगा।"

इस प्रकार यह दोनों मित्र अपनी २ मनोभिलषित भार्य्याओं के साथ एक दूसरे का आनंद वर्द्धन कर ही रहे थे कि एक दूत ने ऐण्टोनियो मित्र का एक पत्र लेकर प्रवेश किया और पत्र वैसेनियोके हाथ देदिया। वैसेनियो ने पत्र खोल कर ज्यों ही पढ़ा कि उसके मुख का रंग फीका होगया, उदासीनता छागयी और मुख कान्ति सब बिगड़ गयी। पोरशिया अपने पति की यह दशा देख कर चित्तमें भय भीत हुई और सोचा कि किसी प्रिय मित्र के मरने का अमंगल समा चार होगा। निदान चुप न रह स की और पूछने लगी कि "प्यारे! इस पत्र में क्या लिखा है कि जिसके पढ़ने से आपका मुख ऐसा होगया कि जैसे सूर्य्य के ऊपर काला बादल छाजाय।" वैसेनि यो ने कहा "प्रिये! इसमें एक हृदय विदारक समाचार है; जब मेरी तुमारी प्रीति आरम्भ हुई तो मैंने प्रथमही तुमें जता दियाथा कि मेरा सब धन क्षीण होगया है और मेरे पास अब कुछ नहीं है परंतु मुझे इतना कहना रह गया था कि मैं ऋणी भी हूं।" यह कह कर उसने शैलाक यहूदी से ऋण लेने और अपने मित्र (ऐण्टोनियो) की उस के साथ कठिन प्रतिज्ञा करने का वृत्तान्त कह सुनाया और तब अपने मित्रका यह पत्र पढ़ा:-

"प्रियमित्र वैसेनियो !

मेरे जहाज़ डूब गये, और यहूदीको जो पत्र लिख दिया था उसकी मिति बीत गयी। अब सम्भव नहीं कि मैं उसमें लिखित वाक्य पूर्ण करने पर किसी भान्ति भी जीता रह सकूं (१) इस लिये मेरी इच्छा है कि अपनी मृत्यु हो जाने के पूर्व्व आपके मुखारविन्द के दर्शन कर लूं। मेरे निमित्त आप अपने विवाह के आनंदमें विघ्न न डालिये गा। और न मेरा पत्र अपनी प्रिया ही को दिखाइयेगा।

तुमारा अभिन्नहृदय

पेराटोनियो।"

पोरशिया ने यह पत्र सुन कर कहा कि "हे प्रीतम ! विवाहकी सब रीतिएं अब शीघ्र समाप्त कर लीजे कि जिससे इस मेरे सब धन पर आप का शास्त्रानुसार भी पूर्ण अधिकार होजाय। फिर चाहे आप उस ऋणको बीस गुणा करके चुकावें अर्थात् बीस गुणा अधिक रुपैया यहूदी को दें परंतु यह कदापि न होगा कि आपके अर्थ मित्र का एक बाल भी बांका होजाय।" शीघ्रही सब सामग्री प्रस्तुत होगयी, कुलाचार्य्यने विधिपूर्व्वक विवाह करा दिया। इसी प्रकार, उसीदिन ग्रेशियो ने भी नेरिसाका पाणि ग्रहण किया। तदनंतर वे दोनों पुरुष, बड़ी त्वरा हट के साथ वीनस नगर की ओर चले गये और

कर वहां पहुंचे जहां ऐण्टोनियो, ऋणके कारण बन्दी गृह में पड़ा हुआ था। ऋण पत्र की मिति बीत गयी थी। वैसेनियो, ऋणके धन से कई गुण अधिक द्रव्य देने लगा पर उस निर्दय यहूदी को यही हठ था कि "मैं ऐण्टोनियोके शरीर का आध सेर मास ही लूंगा जैसा कि प्रण होगयाहै।" इस भयानक विवाद के निर्णय के लिये, वीनस के न्यायाध्यक्ष ने एक दिन नियत किया। वैसेनियो बड़ी चिन्ता मेंथा कि देखिये इस प्राण घातक झगड़े का किस विधि निपटेरा होताहै। दिनरात यही चिन्ता उसे खाती थी और वह इसी शोच में डूबा रहता था।

जब पोरशियाने, अपने पति को विदा किया था तब उससे कह दिया था कि अपने मित्र को अवश्य यहां लेते आना, परंतु कुच्छ सोचने के उपरान्त पीछे उसके विचार में आया कि देश व्यवस्थानुसार ऐण्टोनियो का प्राण बचना असम्भव जान पड़ताहै, इस से कोई ऐसा उपाय रचना चाहिये कि जिससे मेरे पति के इस प्राणप्यारे मित्रका जीव बचे। यद्यपि इसने बड़ी नम्रता पूर्व्वक पतिसे वचन हाराथा कि विना आपकी आज्ञा के मैं कोई काम न करूंगी; परंतु तथापि ऐसे अवसर पर उसने यही विचार किया कि अपने ही बुद्धि बलानुसार इस कार्य्य का संपादन करूंगी और कुच्छ ही क्यों नहो, एक वेर तो वीनस चलकर एण्टोनियो के पद्म में न्यायाधीश के सा

मने कुच्छ बोलूंगी; ईश्वर अवश्य मेरे वचन में शक्ति देगा। पोरशिया का एक संबंधी व्यवस्थाचार्य्य (वकील) था, उस को पत्र लिख कर सम्मति मांगी कि ऐसे कठिन अवसर पर क्या करना उचित है और यह भी लिखा कि दोचार दिन के अर्थ अपने राज्याधिकार के वस्त्र भी भेज दीजे" अपने दूत द्वारा यह पत्र उसने भिजवाया और वही दूत उसके पत्र का उत्तर तथा वस्त्रादिक लेकर लौट आया।

पोरशिया ने यह सब वस्त्र पहने और ठीक वकील की सूरत बन गयी। अपनी सहेली नेरिसा को भी मर्दों के कपड़े पहन वा कर अपना लेखक (मोहर्रिर) बना लिया; और दोनों ऐसे ठीक समय पर चली की वीनस में नियत समय पर न्यायशाला में पहुंच गयी। ड्यूक उस न्यायशाला में न्यायाध्यक्ष था, वीनसकी पंचायत का मुकद्दमा उसके सामने पेश होने कोही था कि पोरशिया, राज्याधिकार के वस्त्र पहने, मोहर्रिर को साथ लिये अन्दर जा दाखिल हुई। जाते ही ड्यूक को सलाम करके एक चिट्ठी उसके हाथ देदी जिसमें बलेरिया के व्यवस्थाचार्य्य (पोरशिया के संबंधी) की ओर से ड्यूक के नाम लिखा था कि:—"मैं एक शारीरिक पीड़ा के कारण स्वयं नहीं आसकता, इस लिये कृपा पूर्व्वक पेण्टोनियो के मुकद्दमे में मेरे मित्र बलथेजर (यह कृत्रिम नाम पोरशिया का रक्खा गया था) को जो इस पत्रको लेकर आपके पास

आते हैं, बोलने और वादानुवाद करनेकी अनुमति दीजिये।"

ड्यूक ने इस निवेदन को स्वीकार करलिया परन्तु उसे इस नये वकील की अनोखी चालढाल, और यौवन, सुन्दरता, कोमलता को देख कर बड़ा आश्चर्य होता था।

अब मुकद्दमे की पुकार हुई; पोरशियाने चारों ओर देखा तो वही निर्दय यहूदी दृष्टिगोचर हुआ। वैसेनियो भी दिखायी दिया, परंतु उसने अपनी पत्नी को इस नये भेष में न पहचाना। वह परम उदासीनता में ग्रस्त होकर एण्टोनियो के पास खड़ा था।

काम आरम्भ हुआ और पोरशिया अपनी वकालत करने लगी। प्रथम ही शैलाक की ओर देख उसने कहा कि "वीनस देश की व्यवस्थानुसार जो कुछ इस पत्रमें आपको देने का प्रण है, वह अवश्य मिलना चाहिये। इसमें सन्देह नहीं। परन्तु दया धर्म्म सर्वों पर है। दया आकाश के मेघों के समान, सुंदर जल की वर्षा करके, पृथ्वी पर के दीनों को हराभरा कर देतीहै। यह सब का भलाकरतीहै-जो दया करताहै उसका भी, और जिस पर दया कीजातीहै उसका भी। दया ईश्वरका साक्षात् रूपहै; जो लोग इस गुण को धारण करते हैं अवश्य वह ईश्वर के परम प्यारे होंगे। पृथ्वी पर राज्य मुकुटकी इतनी शोभा नहीं है जितनी कि दयाकी है। जिस प्राणी में जितनी अधिक दयाहै उतना ही अधिक उसे ईश्वर का अंश समझना चाहिये। हम सब ईश्वर से दया के अर्थ प्रार्थना करते हैं पर स्मरण रक्खो कि हम पर कदापि उसकी दया न होगी जब

न कि हम अपने भाइयों पर दया का सञ्चार न करेंगे।

पोरशिया ने ऐसी कोमलता और मधुरता से यह वचन उच्चारण किये कि जितने लोग उस समय वहां पर उपस्थित थे सबका चित्त भर आया, और सब के मन में दया का प्रभाव उदित होगया। परंतु उस निठुर वज्र हृदय यहूदी को कुछ न हुआ; उसके चित्त में पोरशिया के वचनों ने लेश मात्र भी स्थान न किया। उसने यह वचन सुन कर केवल यही उत्तर दिया कि "मैं प्रतिज्ञानुसार ही अपना ऋण लूंगा और किसी बात से मुझे प्रयोजन नहीं है।" पोरशिया ने पूछा कि "क्या तुमारा ऋणी रुपैये नहीं चुका सकता ?" बैसेनियो ने यह सुनते ही तुरंत कहा कि "मैं एन्टोनियो का सब रुपैया भर देने को उद्यत हूं, उसके बिना भी जितना यह और अधिक मांगे मैं देने पर प्रसन्न हूं" परंतु यहूदी ने हठ करके कहा कि "मैं केवल एन्टोनियो के शरीर का आध सेर मांस ही लूंगा जैसा कि प्रतिज्ञा पत्र में लिखा गया है।" बैसेनियो ने इस समय बड़ी नम्रता पूर्व्वक वकील से निवेदन किया कि "कोई ऐसी व्यवस्था का विचार कृपा करके निकालिये कि जिससे मेरे मित्र के प्राण बचें" तिस पर पोरशियाने बड़ी गंभीरता से उत्तर दिया कि "देश व्यवस्था अब किसी प्रकार भी बदल नहीं सकती।" शैलाक ने अपने पक्षमें उपयोगी यह वचन सुन कर समझा कि वकील मेरी ओर से झगड़ने लगा है, और इसी कारण आनंद में मग्न होकर बोला कि "अहा! यह वकील क्या है मानो साक्षात् प्रभु दानियल (१) न्याय करने को स्वर्ग से उतर कर आया है। हे न्याय सम्प

न्त्र वकील! मैं तुमारी बड़ी प्रतिष्ठा करताहूं, निस्सन्देह तुम अपनी अव स्थासे कहीं बढ़कर बुद्धिमान् हो।"

तदनन्तर पोरशिया ने शैलाक से कहा कि "हमें अपना प्रतिज्ञा पत्र दिखाओ" उसे पढ़ कर और विचार कर कहा कि "इसकी मिति अवश्य बीत चुकी है; देशाव्यवस्थानुसार यहूदी को अधिकार है कि पेएटोनियो के चाहे हृदयके पास से आध सेर मांस अपने हाथसे का टलेवे।" फिर यहूदी की ओर मुंह करके कहा कि "इस निरपराध एएटो नियो पर दया करो, और अपना रुपैया लेकर इस पत्र को फाड़ डाल ने की आज्ञादो।" दुष्ट यहूदीने बड़ी कठोरता से उत्तर दिया कि "मैं अपने आत्मा की शपथ करके कहताहूं कि चाहे स्वर्ग के देवता न क आकर मुझे क्यों न समझावें पर मैं अपने हठ से तिलमात्र भी न हटूंगा।" यह सुन, निराश सूरत बना कर पोरशियाने पेएटोनियो से कहा कि, "तुम अब छुरी के लिये अपना शरीर तय्यार करो, अ बकोई उपाय प्राण रक्षा का नहीं।" शैलाक तब तो बड़ी उमंग से एएटोनियो का मांस काटने के अर्थ छुरी की धार चढ़ाने लगा और अपना कार्य्यसिद्ध होने की आशा पर बड़ा ही हर्षित हुआ। पोर शिया ने एएटोनियो से कहा कि "जो कुछ तुमने और कहना हो सो कहलो।" उसने उत्तर दिया कि "मुझे कुछ नहीं कहना है, दैव इच्छा के आधीन होकर मैं मृत्यु के लिये प्रसन्न हूं।" तब ए एटोनियो ने अपने मित्र वैसेनियो का हाथ अपनी छाती से लगा कर कहा कि "हे परमप्रिय! अब तुमसे विदा होता हूं; इस वात के

अर्थ कुच्छ भी खेद न करना कि तुमारे लिये मैं इस आपदा में पड़ गया। अपनी प्रियासे कह देना कि प्राण से भी अधिक मेरी और तुमारी प्रीति अन्त समय तक बनी रही।" वैसेनियो ने बड़ी दुःखमयी वाणी से कहा "एएटोनियो! यद्यपि मैंने एक स्त्री से विवाह कर लिया है जो मुझे प्राण समानप्यारी है परंतु मेरे प्राण, मेरी स्त्री और मेरा सर्व्वस्व तुमारे ऊपर न्योछावर है। इस राक्षस से तुमारी प्राण रक्षा के लिये हम सब यहीं बलिदान होजायेंगे"

पोरशियाने अपने पति के मुख से यह वाक्य सुन कर किंचिदपि खेद न माना परंतु ऊपरसे बना कर वैसेनियो को कहने लगी कि "यदि तुमारी स्त्री यह वचन सुनती तो अवश्य तुमसे खूब रूठती।" ग्रेशियो जो नित्य अपने स्वामी (वैसेनियों) का अनुगामी होताथा, इस समय कहने लगा कि "मेरे भी एक स्त्री है जो मुझे प्राणसे भी अधिक प्यारी है, यदि वह स्वर्गलोक में जाकर (अर्थात् अपना शरीर त्यागकर) किसी ऐसे देवता को मना सके कि जो इस समय आकर इस दुष्ट यहूदी के विचार को बदल दे तो मैं कदापि उसे वहां जाने (अर्थात् देह त्याग देने से) न रोकूं" इसकी पत्नी नैरिसा जो मोहर्रिर का भेष बनाये पीछे बैठ कर कुच्छ लिख रही थी अपने पति के मुख से यह वाक्य भली भान्ति सुन कर बोली कि "पीठ पीछे जो चाहे जो कुच्छ कहलो परन्तु स्त्री के सामने यदि इस प्रकार कहते तो घरमें रहना भी कठिन होजाता।" इन कटाक्ष युक्त बातों के होने में शैलाक अधीर होकर बोला कि

"समय वृथा जाता है, अब शीघ्र दण्ड की आज्ञा दीजिये।" जितने लोग कचहरी में थे सब सन्न होगये, पेरटोनियो की दीन दशा देख सब का चित्त खेदयुक्त होगया और यही विचार मन में आया कि क्षण भर विचारे का जीवन और है।

पोरशियाने पूछा कि "मांस तोलने को तराजू तय्यार है?" और तब यहूदी से कहा कि "कोई जर्राह ले आओ कि मांस कटते ही वह घाव को ढांपदे और रुधिर बहना बंदकरदे।" शैलाकने, जिसका यही विचार था कि इस भान्ति पेरटोनियो का वध करडालूं, कहा कि "ऋण पत्र में इस प्रकार की प्रतिज्ञा कहीं नहीं है।" पोरशिया ने कहा कि "पत्र में नहीं लिखा तो इससे क्या प्रयोजन है? दया से इतना कर देना उचित है।" इसका उत्तर उस दुष्टने केवल यही दिया कि "पत्र भरमें इसका कहीं वर्णन नहीं है; मैं क्यों ऐसा करूं?" फिर पोरशियाने कहा कि "पण्टोनियोका आधसेर मांस तुमारा है, इसमें कुछ संदेह नहीं; और तुमें अधिकार है कि उसकी छाती में से काट लो! धर्मसभा यह आज्ञा तुमको देती है।" यहूदी ने यह सुनते ही प्रसन्नता के मारे लोट पोट होकर फिर कहा कि "अहा! यह वकील मानो साक्षात् प्रभु दानियल ही अवतार लेकर स्वर्ग से आया है। हे वकील! निस्सन्देह तुम बड़े न्यायशील और प्रशंसा के योग्य पात्र हो।" यह कहकर उस निर्दय शैलाक ने एक बार और अपनी छुरी तेज़ की और फिर पेरटोनियो की ओर देखकर और छुरी दिखाकर कहा

कि "बस अब तय्यार हो जाओ!"

ज्योंही वह राक्षस छुरी चलाकर एएटोनियो का प्राण लेने को था कि पोरशियाने कहा "ऐ यहूदी! क्षण भर ठहर जा! इस प्रतिज्ञा पत्र में रुधिर की एक बूंद तक देने का वर्णन नहीं, केवल आध सेर मांस देने का वचन है। तुम अपना आधसेर मांस निस्सन्देह ले लो, परंतु यदि मांस काटने में, (इस प्रतिज्ञा पत्र के विरुद्ध) ईसाई मत के पुरुष का रुधिर, बूंद भर भी बहेगा तो देश व्यवस्थानुसार तुम्हारा सब धन भूमि इत्यादिक राज्य में ज़ब्त होजायगा।" यह कब सम्भव था कि शैलाक मांस काटले और रुधिर न बहे। इस अपूर्व युक्ति ने एएटोनियो का जीव बचा दिया। जितने जन कचहरी में थे वकीलकी बुद्धिकी तीव्रता पर बड़े प्रसन्न हुए और उच्च स्वरसे सराहना करने लगे। ग्रेशियो, यहूदी को और भी चिढ़ाने के हेतु चिल्ला चिल्ला कर उसीके वचन कहने लगा कि "अहा! यह वकील मानो साक्षात् दानियल ही अवतार लेकर स्वर्ग से उतरा है। हे वकील! तुम धन्य हो! और प्रशंसा के योग्य पात्र हो!"

शैलाक यह नयी युक्ति सुनते ही निराश होगया और अपने विचार का पूर्ण होना असम्भव जान अति दीन मन से कहने लगा कि "लाओ! मैं रुपैया ही लूंगा, अब मांस न काटूंगा।" वैसेनियो अपने मित्र के इस प्रकार अचानक बच जाने से परम गद्गद होगया और यहूदी के मुंह से रुपैये मांगने का वचन सुन तुरंत चिल्ला कर बोला कि "रुपैये यह पड़े हैं लो गिन लो!" परंतु पोरशिया ने शा

न्न भाव से कहा कि "ठहरो! जल्दी क्यों करते हो? यहूदी को विना दण्ड के, नियमानुसार और कुछ न मिलेगा।" फिर शैलाक की ओर फुक कर कहा कि "अच्छा शैलाक! मांस काटलो! परंतु देखो रुधिर की एक बूंद भी न निकले! और मांस भी आध सेर से तिल भर अधिक वा न्यून न हो; यदि ऐसा होगा तो देशव्यव स्थानुसार तुमें मृत्यु का दण्ड मिलेगा और तुमारा सब धन भूमि राज्य में ज़ब्त कर लिया जायगा।" शैलाक ने कहा कि "मेरा रुपैया दिला दीजे और मुझे चले जाने दीजे; मैंने और सब दावा छोड़ा।" वैसे नियो फिर कर से बोला कि "यह लो रुपैया धरा है।"

शैलाक रुपैया लेने को ही था कि पोर शिया ने कहा "ऐ यहूदी! ठहरजा! हमारा एक और दावा तुम पर है! तुमारा सब धन भूमि तो राज्य में जब्त होचुका, क्योंकि तुमने यहां के एक प्रतिष्ठित रईस के प्राण लेने का यत्न किया था, और इसी कारण तुम वध के योग्य भी ठहर चुके। ड्यूक (विचार पति) से क्षमा के लिये प्रार्थना करो, उन्हें अधिकार है, चाहे वह तुमारे प्राण लें वा छोड़दें।" शैलाक, चारों ओर से निराश हो, घुटने टेक कर अपने प्राणों के अर्थ क्षमा मांगने लगा। तब ड्यूक ने कहा कि शैलाक! तेरे क्षमा मांगने से पूर्व्व ही मैं तुझे प्राण दण्ड से विमु क्त करता हूं। देख ईसाई धर्म और तेरे धर्म्म में इतना भेद है। इस तुमारे अपराध के बदले तुमारा आधा धन जुर्माने में लिया

जायगा, और शेष आधा पेराटोनियो को दिया जावेगा।" परम उदार चित्त पराटोनियो ने इस समय पर निवेदन किया कि "शैलाक के धन में से मैं अपना भाग इस नियम पर शैलाक ही को दे देने पर उद्यत हूं, यदि वह इस आशय का दान पत्र लिखदे कि उसके मरने के पीछे उसका धन उसकी पुत्री और जामाता को मिले।" पेराटोनियो, अपना भाग दे देने और इस प्रकार का पत्र लिखवाने में इसकारण उद्यत हुआ कि शैलाक की पुत्री ने अपने पिताकी आज्ञा के विरुद्ध एक ईसाई से विवाह कर लिया था और यह ईसाई लोरिङ्ग नाम, पेंटोनियो का बड़ा मित्र था। यहूदी अपनी पुत्री के इस संबंध से ऐसा क्रुद्ध हुआथा कि उस ने उसको अपने धन भूमि के अधिकार से रहित कर दिया था। यहूदी ने यह बात स्वीकार करली; और इस प्रकार बदला लेने से निराश हो, तथा अपना धन भी गंवाकर, वह कहने लगा कि "मेरा चित्त अब सावधान नहीं है, मुझे घर जाने की आज्ञा मिले। इसदान पत्रपर पीछे हस्ताक्षर कर दूंगा।" ड्यूकने आज्ञा दी कि "अच्छा जाओ! यदि तुम अपने निर्दयी पन पर पश्चात्ताप प्रकट करो और ईसाई धर्म स्वीकार करलो तो राज्य तुमें आधा धन भी छोड़ देगा।"

विचारपति ड्यूकने पेराटोनियो को बन्दी से छुड़वा दिया और कचहरी विसर्जन की। इस नव युवा वकील (पोरशिया) की उसने अपने मुख से बड़ी प्रशंसा की और इसे अपने स्थान

पर भोजन करने का निमन्त्रण किया। पोरशिया का विचार था कि पतिके पहुंचने से पहले अपने स्थान "वेलमौराट" में पहुंच जाय, इसकारण वह इस निमन्त्रण को स्वीकार न कर सकी और अति नम्रता पूर्वक बोली कि "आपका यह बड़ा अनुग्रह है परंतु कुच्छ कार्य्य बहुत आवश्यक है इस कारण अभी घर जाना है इस समय आप क्षमा करें तो बड़ी कृपा हो।" ड्यूकने कहा कि "मुझे इस बात पर परम शोक है कि आपको इस समय ठहरने का अवसर नहीं" फिर वेराटोनियो की ओर मुंह करके कहा कि "इसी महात्मा (पोरशिया) ने तुमारी प्राण रक्षाकी है अस्मात् इसे यथोचित पारितोषिक देना चाहिये।"

यह कह कर ड्यूक और पंच तो कचहरी से विदाहुए, और इधर वैसेनियो ने पोरशिया से कहा कि "हे परम योग्य महात्मन्! आपकी कृपा हीसे आज मैं,और मेरा मित्र महा आपदा से बचे हैं; इस आपत् से आपने हमारा उद्धार किया है, इसलिये यह तीन सहस्र डुकेट मुद्रा, जो आपकी तीव्र बुद्धिके प्रभावसे यहूदी के पास से बचगये हैं, पारितोषिक स्वरूप ग्रहण कीजे। आपके अनुग्रह के आगे यह पारितोषिक महातुच्छ है अस्मात् हम जन्म भर आपके अनुग्रहीत रहेंगे।"

वैसेनियो ने बहुत कुछ कहा परंतु वकीलने कुछ भी लेना अंगीकार नकिया। जब वैसेनियो बहुतही गिड़गिड़ाया और कुछ न कुछ अंगीकार करने के अर्थ बहुतही हठ किया तो पोरशिया ने कहा कि "अच्छा! अपने हाथ के दस्ताने मुझे देदो, तुमारे स्मरणार्थ इन्हें पहना करूंगा" वैसेनियो ने दस्ताने हाथ से उतारे तो उसके हाथ में वह अंगूठी पहनी हुई दिखायी दी कि जो विवाह समय में पोरशियाने उसे दी थी। पोरशियाने वह अंगूठी देखतेही कहा कि "यही मुझे देदो! यही तुमारी कृतज्ञता का चिन्ह मेरे पास सदैव बनारहेगा।" पोरशिया के मुखसे यहवचन निकलते ही वैसेनियो को इससे अत्यन्त खेद हुआ, कि वकीलने वही वस्तु मांगीजो वह नहीं देसकता, और जिसके अपने से पृथक् करने अर्थ उसने अपनी परमप्रिय भार्य्या से शपथ् की हुई है। इस कारण उसने बड़ी घबराहट और नम्रतासे कहा कि "महाशय! यह अंगूठी विवाह समयमें मेरी स्त्रीने मुझे दी है; मेरी उससे प्रतिज्ञा है कि "यावत् जीवन मैं इसे शरीर से अलग न करूंगा। यदि आपकी अंगूठी लेनेकी इच्छाहै तो इस सारे वैनिस नगर में जो सबसे अधिक मूल्यकी अंगूठी मिले, मैं आपको चलकर खरीद दूं।" इसपर पोरशिया ने अप्रसन्न मुख बनाकर कहा कि "बस! रहने दीजे! आप मुझे सिखाते हैं कि भिखारियों को क्या उत्तर देना चाहिये" यह कहकर पोरशि

या झट से चली गयी। एएटोनियोने यह देखकर उच्चस्वरसे कहा कि "मित्र! इन्हें अंगूठी देदो! इनके परमोपकार के सामने स्त्रीकी अप्रसन्नता का बहुत कुछ विचार न करना चाहिये।" वैसेनियोने यह वाक्य मित्र का सुनते ही झट अंगूठी हाथसे उतार कर ग्रेशियो को देदी कि तुरंत वकील कोजा कर देआवे। पोरशियाने वह अंगूठी ग्रेशियो से लेली और इस समय मोहर्रिर नेरिसा ने भी ग्रेशियो (अपने पति) से अंगूठी मांगली। उसने भी अपने स्वामीके अनुगत हो झट दे डाली।

अपने २ पतियों से अपनी ही दी हुई अंगूठियें लेकर पोरशिया और नेरिसा दोनों घरकी ओर चलीं। रस्ते में ठट्ठा मार२ कर कहतीथीं कि "आज जब हमारे पति घर पर आवेंगे तो हम भली भान्ति उन्हें धमकावेंगी कि "बताओ! हमारे विवाह चिन्ह क्या किये? किसी पर स्त्री को तो नहीं दे आये?"

पोरशिया जब लौटकर आयी तो अत्यन्त ही प्रसन्नथी कि यह काम उस से बहुत अच्छी प्रकार बनगया। इस प्रफुल्लता के कारण उसे इस समय जगत आनन्दमय दीख पड़ताथा चन्द्रमाकी खिली हुई चान्दनी ऐसी शोभायमान थी जैसे परोपकारी का सुयश। पोरशिया और नेरिसा ने घर पंहुचते ही अपने भेष उतार डाले और साधारण कपड़े स्त्रियों के पहन लिये। इतने में, थोड़ी देर के पीछे, इन दोनों के पति भी एएटो

नियों को संगलिये हुए आपहुंचे और पोरशियाने बड़ेशिष्टा चार से उन्हें बैठाया और कुशल प्रश्न पूछा। महाआपद और संकट से बचने का धन्यवाद और बधाइयां होही रही थी कि महल के एक कोने में नेरिसा और उसके पतिकी कहा सु नी होतीहुई सुनायीदी। पोरशियाने बुलाकर पूछा कि "क्या बातहै? अभी से तुममें लड़ाई झगड़ा आरंभ होगया?" ग्रेशियोने उत्तर दिया कि "हे स्वामिनि! नेरिसा मुझ से एक तुच्छ अंगूठी के कारण झगड़ा करती है जो उसने मुझे दी थी और जिस पर खुदा था कि मुझसे स्नेह रख और कभी मेरात्याग न कर!" "LOVE ME AND LEAVE ME NOT"

नेरिसाने उत्तर दिया कि "उसके मूल्य की कुछ बात नहीं है; जब मैंने तुमें वह दी थी तो तुमने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हारी प्रीति के अर्थ मैं यावज्जीवन इसे अलग न करूंगा, और अभी आजही कहते हो कि मैंने वकील के मोहर्रिर को उसे देदिया; मैं तुम्हारी इसबात का निश्चय नहीं करती और जानती हूं कि किसी स्त्री को दे आये हो!"

ग्रेशियो ने कहा "नहीं! स्त्री को नहीं दी, तुम्हारे ही वय के एक युवा को दी है जो उस असाधारण बुद्धिबल संयुक्त वकील का मुहर्रिर था कि जिसने आज परम बुद्धिमानीसे प्यारे एण्टोनियोकाजी बचा लिया। उसने मुझसे अंगूठी मांगी, मैंने देदी। यह काम आज ऐसा हुआ है कि यदि उसके बदले कोई हमारा

प्राण तक मांगता तो हम नांहीं न करते।"

पोरशियाने यह सुन कर कहाकि "ग्रेशियो! यह तुमारा बड़ा दोष है कि तुमने अपनी प्रिया के ऐसे प्रिय चिन्ह को, दृढ़ प्रतिज्ञा करने पर भी दूसरे को दे डाला! देखो, मैंने भी अपने प्राणप्यारे को एक अंगूठी दी है और मुझे विश्वास है कि चाहे पृथ्वी उलटजाय पर वह उसे कदापि जुदा न करेंगे।"

तब ग्रेशियोने अपने बचाव के अर्थ झटसे कहा कि "प्रथम तो मेरे स्वामी (बैसेनियो) नेही अपनी अंगूठी वकील को दी थी, तब उसके मुहर्रिर ने भी, कि जिसने लिखने में बहुत परिश्रम किया था; मुझसे अंगूठी मांगी और अपने स्वामी के अनुगामी हो मैंने भी झट से देदी।"

यह सुनकर पोरशिया ने बड़ा अप्रसन्न मुख बना लिया तथा पतिको ऐसा काम करनेके अर्थ झिड़कना प्रारम्भ किया और कहा कि, "तुमने मेरी अंगूठी क्यों दे डाली? ठीक ऐसाही जान पड़ता है कि किसी स्त्रीने तुमसे वह छीन लीहै।"

बैसेनियो यह वचन सुन कर बड़ा खेदितहुआ और अत्यन्त शांतशील होकर कहने लगा कि "मैं शपथ करताहूं कि वह अंगूठी किसी स्त्रीके पास नहीं है। वह एक वकीलके पास है, ऐसे वकील के पास जिसने १००० डुकेट तक लेना अस्वीकार कियाथा, और केवल वही अंगूठी मांगीथी। परंतु जब मैंने

वह अंगूठी नदी तो वह अप्रसन्न होकर चला गया। मुझे तब अपनी कृतघ्नता पर ऐसी लज्जा आयी कि पीछे से मैने वह अंगूठी उसके पास भिजवादी। हे प्रिये! ऐसे स्थान पर भलाओर क्या हो सकता था? यह मेरा अपराध क्षमाकर! मुझे दृढ़ विश्वास है कि यदि तुम वहां होतीं तो अवश्य आप मुझसे अंगूठी लेकर उस योग्य वकील को दे देतीं।"

ऐण्टोनियो इस झगड़े को देख कहने लगा कि "हाय! मैंही इस झगड़े का मूल हूं।" पोरशिया ने ऐण्टोनियो से झट दिलासा देकर कहा कि "आप इसका कुछ दुःख न मानिये। आप हमारे सिर माथे पर हैं।" ऐण्टोनियो ने उत्तर दिया कि- "मैंने एक समय अपने मित्र के अर्थ अपना शरीर तक गिरवी रख दिया था; यदि वह महात्मा, जिसको तुमारे पति ने अंगूठी देदी है, आज न आजाता तो मैं अब तक जीता न होता। अब मैं फिर शपथ करता हूं कि तुमारे पति अब कभी अपना वचन उल्लंघन न करेंगे।" पोरशिया ने कहा "तो आप ज़ामिन हैं। लो यह अंगूठी इन्हें दे दो और समझा दो कि अब इसको कहीं न खोवें और न किसी को न दें।"

वैसेनियो ने पुनः अपनी प्रिया से अंगूठी ली, परंतु उसे देख कर वह अत्यंत ही चकित हुआ; क्यों कि यह ठीक वैसी ही अंगूठी थी जैसी कि वह वकील कोदे आयाथा। इस आश्चर्यको वह छिपान सका; जिसके प्रकाशित करने

ही धीरे२ उस पर सब भेद खुलगया कि यह उसकी प्रिय पत्नी ही थी कि जिसकी कौशलता और बुद्धिमानी के कारण उसके मित्र के प्राण बचे। वकील के भेष में जो२ वचन प्रिया ने कहे थे उनको स्मरण कर२ वेसेनियो अत्यन्त हर्षित होता था और वार२ विस्मय करके अपने भाग्य को सराहता तथा ऐसी योग्य पत्नी को बड़ी२ छाती से लगाताथा। उसने पोरशिया का धन्यवाद किया और बहुत सी प्रशंसा उसकी की।

तदनंतर पोरशिया ने ऐण्टोनियो के हाथ में कुछ चिट्ठियां दीं, जो दैवात् उसके हाथ पड़ गयी थीं। उनमें ऐण्टोनियो के उन सब जहाजों के ठिकाने पर पहुंचने का समाचार था कि जिनको ऐण्टोनियो अब तक डूबा हुआ समझे था। इस प्रकार भाग्य उदय होने पर यह सब अत्यंत प्रफुल्लित हुए और ईश्वर का सब मिल धन्यवाद करने लगे।

इसके उपरान्त जब कभी यह मित्र इकट्ठे होते तो स्त्री पुरुष के न पहचानने और अंगूठी के कौतुक होने पर बहुत ही हंसते।

इति।

ईश्वर हमारे सब पाठकों को पोरशिया कीसी भार्या और ऐण्टोनियो का सा मित्र प्रदान करे!!

यह
"वीनस का व्योपारी"
नाम नाटक, पुस्तक के आ
कार में भी हमारे पास प्रस्तुत हो
गया है; जिस किसी को लेना हो
।≡) मूल्य सहित हमें पत्र लिखे
श्री पण्डित मुकुन्द राम
काश्मी ध्यत्त॰